

संपादक की कलम से

राममय भारत को आकार देने के संकल्पों का गणतंत्र

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसी दिन 26 जनवरी, 1950 को हमारी संसद ने भारतीय संविधान की पास किया। इस दिन भारत ने खुद को संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया। भारतीय संविधान के अधिग्रहण पर्व पर भ्रूंश्री श्रीराम विराजित है, लेकिन पूर्ण सरकारों ने श्रीराम के गणतांत्रिक गोरख को न अपनाने के कारण चौहत्तर वर्षों में हमारा गणतंत्र कितनी ही कंटीली ज्ञाइयों में फैसा रहा। लेकिन इस वर्ष प्रभू श्रीराम प्रतिष्ठा का एवं व्यापक बहुगुणित हो गया है और हमें अब वास्तविक रूप में संप्रभुता का अहसास होने लगा है। भारतीय इतिहास का यह नया प्रस्थान बिंदु है जहां से भारत राममय होने की ओर अग्रसर हो रहा है। भारतीय मानस, मनीषा और जनजीवन के पांच सौ वर्ष पुराने संघर्ष-गाथा का अनितम अध्याय लिखते हुए अब भारत रामराज्य के वास्तविक स्तर पर में प्रवेश कर रहा है, जहां सूख सम्पदा बड़ी मात्रा में होगी, प्रेस और खुशी का चातावरण होगा, आदर्श राज्य की कल्पना आकार लेंगी, प्रेस और खुशी का चातावरण होगा, आदर्श राज्य एवं अमित आलेख आने वाले हजारों वर्षों के लिये एक सन्देश है, एक उत्तर धरातल है, स्वयं के द्वारा दुनिया को प्रेरणा देने का अवसर है। दुनिया में आर्सर शासन प्रणाली में राम राज्य ही शांति, सह-जीवन, सह-अस्तित्व एवं वस्तुधर कुटुम्बकम के मंत्र को आकार देने का मार्ग है। वर्तमान दुनिया को इसी राम राज्य की अवश्यकता है। श्रीराम मंदिर का निर्माण इस लिहाज से भारत ही नहीं सम्पूर्ण दुनिया में आनंद आदर्श जीवन मूल्यों एवं लोकतांत्रिक आदर्शों की स्थापना का शुभ अवसर है।

गणतंत्र को रामग्रन्थ की काही नहीं, आस्था एवं संकल्पों का पर्व है, इस पर्व का जरूर समझें हैं, राजपत्र पर निकलने वाली ज्ञाइयों में श्रीराम की प्रभावी एवं प्रेरक प्रस्तुति होगी। जिसमें प्रभु श्रीराम के आदर्शों को अपनाने हुए कुछ कर गुजरने की तमन्ना भी झलकेंगी तो अब तक कुछ न कर पाने की बचेंगी भी दिखाई देगी। जहां हमारी जगती आजाए से देखे गये स्वयंनों के आकार देने का विवरण है तो जीवन को कुशरीकों की सुरक्षित करने एवं नवा भारत निर्मित करने की तीव्र तैयारी है। अब रामी स्व-व्यापार, राष्ट्रीय एवं स्व-पहचान का अहसास होने लगा है। जिसमें आकार लेते वैयक्तिक, सामुदायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक अर्थ की सुनहरी छटाए हैं। अब बहुत कुछ बदलने जा रहा है। पांच सौ साल पहले जब बाबर की बर्बर सेनाओं ने रामलीला के मन्दिर को ध्वस्त करने का अभियान छोड़ा था, वो एवं उसके बाद की शासन-व्यवस्थाओं ने श्रीराम को धूंधलाने के प्रत्यक्ष किये, जब उनके आकारों ने या सोचा होगा? वे राम राष्ट्रीय की आस्था को नष्ट कर देना चाहते थे, भारत की समृद्ध विवरान एवं संस्कृति को जोड़ने के अवसर हुआ। आज के पारिशृंखलों को देखें हुए कहा जा सकता है कि एक माने में आकारों ने लगत हुए, राष्ट्र-विरोधी एवं हिन्दू-विरोधी ताकते परस्त हुए। अयोध्या में देखे गये स्वर्णपंथ इतिहास से भारत किया गया है कि भारतीयों की आस्था, संघर्ष और विश्वास परम्परा को एक नया मुकाम दे दिया गया है। एक नये गणतंत्र का अभ्युदय हुआ है।

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस हमारी उन सफलताओं की ओर इशारा करता है जो इन्हीं लोकी अवधि के दौरान अब जी-टोड़ प्रयासों के फलस्वरूप मिली है। यह पर्व इस वर्ष अधिक उमंग एवं उत्साह से इसलिये भरा है कि श्रीराम मंदिर की प्रगति भारी की अनुरूप कहानी का यह साश्वी बन रहा है, जहां आठ हजार लोकों की जीवनशक्ति उपस्थित थी, उसमें 140 करोड़ भारतीयों की मनीषा, जीजीविधा, धार्मिकता, रचनात्मकता, सुजनात्मकता, उद्यमशीलता की गवाह थी। हर क्षेत्र में नया इतिहास निर्मित करने वाली प्रतिभाएं एवं हस्तियां वहां मौजूद थीं, जो प्रभु श्रीराम से शक्ति लेकर नया भारत को निर्मित करने के लिये तपत हुए हैं। यह मंदिर सिफ़े एवं धार्मिक स्थल को ध्वस्त करने के लिये लोकों को लकड़ी शुरू हुए संघर्ष का अंत नहीं, बल्कि अनेक वाली पीढ़ियों के लिये नया करने, अन्धृत रचने, राष्ट्र-विरोध को निर्मित करने एवं अन्यांसी आस्थाओं को बलशाली बनाने का पैमान है।

श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन जहां ताका की मूर्ति है, वहीं ऋषि मुनियों और जनसाधारण की रक्षा का संकल्प भी है। श्रीराम ने कठोर और बाधाओं में भी उच्च जीवन मूल्यों को प्रतिस्थापित किया। उन्होंने जहां आदर्श-शासन व्यवस्था का सूत्रपात्र किया, वहीं आदर्श मानव चरित्र एवं जीवन को आकार दिया, वहीं जीवन यूली-जीवन जीवनी में आज भी व्याप है। उल्लास के अन्तर्मात्रा को एक प्राचीन नाम दिया है, जिसमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगवान नाम, सीता एवं राम परस्पर एवं अनुरूप स्वरूप के रूप में विनियत किया है, जिनमें करुणा, दया, क्षमा, सत्य, न्याय, सहाय, सदाचार, धैर्य और नेतृत्व जैसे गुण समावित है। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा और मित्र हैं। 26 जनवरी भारतीय संविधान के लागू होने का दिवस है, तो 22 जनवरी महामानव, त्यागमूर्ति, मायावंशुपूर्ण लिहाज के अवधारणा के भाग तीन पर जहां हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लेख रहता है, भगव

